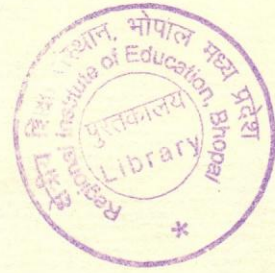


अध्याय—प्रथम

शोध परिचय

- 1.1. प्रस्तावना
- 1.2. शोध की आवश्यकता
- 1.3. समस्या कथन
- 1.4. समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषाएँ
- 1.5. शोध में प्रयुक्त चर
- 1.6. शोध के उद्देश्य
- 1.7. शोध की परिकल्पनाएँ
- 1.8. शोध की परिसीमाएँ



अध्याय—प्रथम

शोध—परिचय

1.1 प्रस्तावना :—

वर्तमान में शिक्षा का लक्ष्य बालक का सर्वांगिन विकास करना है। यह विकास क्रमशः होता है। अतः समय—समय पर विद्यार्थी की परीक्षा लेकर यह जाँच करना आवश्यक है कि, विकास कहा तक हुआ। स्कूल में विद्यार्थी अनेक विषयों का अध्ययन करता है। समय—समय पर इन विषयों उसकी योग्यता की जाँच करते रहने से ज्ञात होता है कि, उसने कहा तक सिखा है। भिन्न—भिन्न विषयों में सिखी गई यह योग्यता बालक की सम्प्राप्ति परीक्षाओं से ज्ञात होता है। इन परीक्षाओं में कुछ बच्चे सफल होते हैं, तो कुछ बच्चे असफल होते हैं। सफल असफल के कारण चिन्ता घटती और बढ़ती जाती है। चिन्ता अच्छी या बुरी होती है। अच्छी चिन्ता सकारात्मक की ओर बढ़ती है और बुरी चिन्ता नकारात्मक की तरफ बढ़ती है। हर व्यक्ति में कुछ न कुछ क्षमता होती है।

आधुनिक काल में विद्यार्थियों की चिन्ता स्पर्धा के कारण बढ़ रही है। विद्यार्थियों का भविष्य खुद विद्यार्थी न चुन कर उनके अभिभावक, माता—पिता, शिक्षक ही क्षेत्र चुनने के लिए कहते हैं। उसमें विद्यार्थियों को कोई रस हो या न हो। इसलिए उनकी चिन्ता बढ़ती ही जाती है। विद्यार्थियों को पढ लिखकर अच्छी नौकरी मिलनी चाहिए, इसलिए आजकल स्पर्धात्मक युग में जीवन जीने के लिए बहुत से इम्तीहान देने पड़ते हैं। हर कोई विद्यार्थी, व्यक्ति इस स्पर्धा में उतर रहा है, या इस स्पर्धा का सामना कर रहा है।

चिन्ता से दूर रहने की अपेक्षा यह विशेष अच्छा है कि, उसको स्वीकार करले। चिन्ता को पूर्ण रूप से निराकरण करना कठिन है। हो सकता है कि, चिन्ता से हम कुछ समय के लिए मुक्त हो जाएँ। किंतु इसके दीर्घ समय के लिए सफलता पूर्वक दूर नहीं रहा जा सकता। यदि हम इसका सामना करें तो इस पर विजय प्राप्त की जा सकती है। अंतमें यह कम हो जाती है। चिन्ता को

स्वाभाविक तथा प्राकृतिक संवेग मान लेने से व्यक्ती में उसके सहन करने की योग्यता आ जाती है। जिससे उसके जीवन में उसका महत्व कम हो जाता है।

बालक का विकास परिवार में होता है। बालक के विकास के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है। पारिवारिक अनुशासन, आर्थिक स्थिति, उच्च महत्वकांक्षाएँ, परिवार के सदस्यों के परस्पर संबंध आदि बालक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। अत्याधिक अनुशासन अथवा अनुशासन हीनता, आवश्यक भौतिक वस्तुओं का अभाव अथवा अत्याधिक संपन्नता, असंभावित महत्वकांक्षाएँ अथवा योग्यता को नकारना, परिवार में टुटते संबंध, कलह, भेदभाव पूर्ण व्यवहार आदि के कारण बालको में प्रायः कुसमायोजन हो जाता है और बालको की चिन्ता बढ़ जाती है।

बालक के मानसिक स्वास्थ्य पर समाज का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है। सामाजिक वातावरण अथवा सामाजिक संगठन की दोष पूर्ण होने पर बालक के स्वास्थ्य पर उसका विपरित प्रभाव पड़ता है। समाज के आंतरिक झगड़े, जातीय संघर्ष, धार्मिक उन्माद, धार्मिक दावपेच, उच्च-नीच व अमीर-गरीब की भावना, सामाजिक कुरीतियाँ, व्यक्तिगत स्वतंत्रता व सुरक्षा का अभाव जैसे बातें बालको में मानसिक तनाव उत्पन्न करती हैं और बच्चों की चिन्ता बढ़ने के लिए प्रवृत्त होती है।

❖ पाठ्यचर्या के बोझ कम करना :-

इस बात को लेकर लंबे समय से चिन्ता व्यक्त की जा रही है कि, स्कुली बच्चों को पाठ्यचर्या के शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार का बोझ सहना पड़ता है। वस्तुतः माता-पिताओं और समुदाय की ओर से यह शिकायत जोरदार ढंग से की जा रही है कि, विद्यालयी पाठ्यचर्या बहुत भारी हो गयी है। पाठ्यचर्याओं का भारी बोझ बच्चों में बहुत अधिक चिन्ता और तनाव पैदा करती है। और इस तरह उसके सामान्य विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। हाल में इस समस्या पर विचार करने और सभी स्तरों के स्कुली बच्चों तथा खास तौर से छोटे बच्चों का बोझ कम करने के उपाय सुझाने के लिए कदम उठाए गए। बोझ कम करने के लिए सुझाए गए अनेक उपायों के बावजूद सच्चाई यह है कि,

विद्यालयी पाठ्यचर्या इस गंभीर समस्या से आज भी ग्रस्त है। अब शायद वह समय आ गया है जब इस समस्या का सीधे सामना किया जाए।

पाठ्यचर्यागत बोझ की समस्या बहुत जटिल है। इसकी जड़े इससे संबंधित कई मसलों में समाई हुई है। मात्र पाठ्यपुस्तकों के आकार को छोटा करके इस समस्या को हल नहीं किया जा सकता, बल्कि इसे इसकी समग्रता में समझना होगा। समाधान के आंशिक समाधान का एक तरिका यह होगा कि, जो जानकारी पुरानी पड गई है उसे हटा दिया जाए। काफी हद तक बोझ की समस्या का कारण बहुत सारें तथ्यों का छोटा लगाने पर दिया गया जोर भी हैं। इसका असर विद्यार्थियों पर भी पडता हैं। इस दुश्चक्र को भंग करने लिए अधिगम की 'अंतवस्तु' की अपेक्षा उसकी 'प्रतिक्रिया' पर जोर दिया जाना चाहिए अध्यापन को एक ऐसा रूप देना होगा जिससे विद्यार्थी 'सिखने की कला की शिक्षा' हासील कर सके लेकिन, इसके लिए सेवा प्रवेश के पुर्व और उसके उपरांत दोनो अवस्थाओं में अध्यापकों को तैयार करना आवश्यक होगा। जब तक पाठ्यचर्यागत समस्या को उसकी समग्रता में देखते हुए उसका समाधान नहीं किया जाएगा। तब तक वह अपनी जगह कायम ही रहेगा।

❖ छात्रों को उत्साह रखने की सीख :-

बच्चों के बीच पढाई के दबाव के चलते आत्महत्या के बढ़ते मामलों को लेकर बोर्ड ने चिन्ता जताई है। महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड ऑफ एज्युकेशन के मुंबई डिविजन ने बच्चों से भावनात्मक अपील करते हुए कहा है कि, हताशा में कोई कदम उठाने वालों को सोचना चाहिए कि, वे आत्महत्या न करे और अपने पालकों को किसी मुश्कील में न डाल दें।

महाराष्ट्र में पिछले दिनों छात्र-छात्राओं के बिच आत्महत्या की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड ऑफ एज्युकेशन ने अब भावनात्मक अपील की है। एक पत्र में बोर्ड ने कहा है कि, हमें अपनी कमियों का भी आकलन करना चाहिए और हताश नहीं होना चाहिए। आप यदि लगातार कोशिश करे तो सफलता जरूर मिलेगी। इसलिए हताश होने की जरूरत नहीं है। बोर्ड ने अपने पत्र में यह भी कहा है कि, अपने से बड़ो से हमें पढने की

नयी तकनीकें सिखना चाहिए और उन्हें सन्मान देना चाहिए कि, कही इससे आप अपने पालकों को मुसीबत में तो नहीं डाल रहे हैं। मुंबई डिव्हिजनल बोर्ड के श्रीधर सालुंके कहते हैं कि, हम छात्रों के अलावा पालकों को भी कारुंसिलिंग देने की कोशिश कर रहे हैं ताकि ऐसी दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं से बचा जा सके। वही पैरेंट-टीचर युनायटेड फोरम की अध्यक्ष अरुंधति चौहान का कहना है कि, आज के बच्चे काफी समझदार हैं और वे ऐसी बातों में नहीं आते हैं। बोर्ड को भावनात्मक बातें करने के बजाय कोशिश करनी होगी कि वह बच्चों पर से तनाव कम करने के उपाय करें।

सामान्य जीवन में होने वाली किसी प्रकार की कठिन एवं उलझन पूर्ण परिस्थितियों, आदर्श एवं प्रतिष्ठा की रक्षा व्यक्ति के कल्याण तथा सुरक्षा में उत्पन्न बाधाओं की आशंका इत्यादी के कारण व्यक्ति स्वाभाविक रूप से भयभीत और चिंतित हो जाता है।

प्राचीन युग से ही मानव भयभीत होता आ रहा है। कभी वह देवी-देवताओं के शाप से भयभीत व चिंतित रहा है। आधुनिक युग में अपेक्षाकृत मनुष्य के सम्मुख अनेक समस्याएँ हैं। जिनका संबंध परिवार, समाज, आदर, सन्मान आदि से है। चिन्ता भय से उत्पन्न होती है तथा भय मनुष्य के लिए आवश्यक व स्वाभाविक है। जो लोग अपने सामने आये हुए खतरों से डरते नहीं हैं, वे बुद्धिहीनता का परिचय देते हैं। क्योंकि बुद्धिमान लोग अपने ज्ञान के आधार पर पहले से ही पता लगा लेते हैं कि, कौन सी विपत्ती आ रही है। तथा कौन कौन से साधनों के सहारे उनका सामना किया जा सकता है। आधुनिक युग अधिक जटिल होने के कारण आज का व्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक भयभीत तथा चिंतित हो जाता है।

चिन्ता मनःस्नायुविकृती की प्रमुख विशेषता भय है, क्योंकि भय के माध्यम से ही चिन्ता की उत्पत्ति होती है। विभिन्न विद्वानों के मतों को ध्यान से अध्ययन करने पर यह पता चलता है कि, "चिन्ता भय से उत्पन्न होती है।"

मैकडुगल के अनुसार, यह मनःस्नायुविकृती उस अवस्था में उत्पन्न होती है, जब व्यक्ति एक निश्चित उद्देश्य के परिणाम प्राप्त करने के लिए उत्सुक रहता है और ऐसी परिस्थितियों में जब संवेग का जन्म हो जाता है, तो उसे

यह प्रतीत होने लगता है कि, वह कठिनाईयों पर विजय प्राप्त नहीं कर पायेगा। यहा यह बताना भी अभिष्ट होगा कि, भय व चिन्ता में अंतर है। भय वह मनोस्थिति है जो थोडे समय तक रहती है। लेकिन चिन्ता भय का संवेगात्मक भाव है। इसी तरह भय का संबंध उन भयपूर्ण परिस्थितियों से होता है, जो वर्तमान में उपस्थित होता है। लेकिन चिन्ता का संबंध ऐसी घटनाओं से होता है कि, जो भविष्य में घटित होनेवाली होती है।

चिन्ता एक प्रक्रिया में रूकावट समझी जाती है। एक व्यक्ति जो चिन्ता से पीडित होता है। एक कार्य करने में पूर्ण शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता। इस प्रकार यह विचार किया जाता है कि, चिन्ता क्रिया में रूकावट डालती है और इस तरह सीखने की गती में कमी आ जाती है। किंतु यह विचार पूर्णतः सत्य नहीं है और चिन्ता के कार्य को ठीक से न समझने के कारण है। वास्तव में चिन्ता सीखने में रूकावट भी डाल सकती है और इसको प्रेरित भी कर सकती है।

बुग्लेस्की के अनुसार, अवधान सिखने में एक प्राथमिक तत्व है। अवधान पुरस्कार की इच्छा, दण्ड से बचने की इच्छा, जिज्ञासा इत्यादी, के परिणाम स्वरूप होता है। किंतु अवधान के लिए मुल वस्तु चिन्ता है। बुग्लेस्की का विचार है कि, शिक्षक का कार्य आवश्यक सीमा तक चिन्ता उत्पन्न करना है। यह एक कठिन प्रश्न है कि, कितनी चिन्ता उत्पन्न की जाएँ, क्योंकि यदि यह चिन्ता बहुत अधिक है तो यह सीखने की स्थिति से बचने को प्रोत्साहित करेगी और यदि बहुत कम है तो अवधान में कमी आयेगी। बुग्लेस्की का कथन है कि, जब विद्यार्थी की जिज्ञासा जागृत की जाती है तो चिन्ता उत्पन्न हो जाती है क्योंकि, जिज्ञासा चिन्ता का गुप्त रूप है। विद्यार्थी की जिज्ञासा जागृत करनी चाहिए और उन्हें ऐसे कार्य देने चाहिए कि, जिनमें वह सफल हों।

■ चिन्ता का अर्थ :-

Anxiety शब्द की उत्पत्ती लैटिन भाषा के शब्द **Anxietas** से हुई है जिसका अर्थ है— **Experience of Varying blends of uncertainty, agitation and threat.**

मनोविज्ञान में इस शब्द को सर्वप्रथम लाने का श्रेय फ्रायड (1894) को है। में (R. may) 1950 के अनुसार इस शब्द का उपयोग सन 1930 तक बहुत कम हुआ। इसका उपयोग केवल मनोविश्लेषक ही किया करते हैं। मनोविज्ञान की पुस्तकों के Index में भी Anxiety शब्द नहीं होता था। इस सम्बन्ध में कुछ अधिक कहने से पहले आवश्यक होगा की चिन्ता के अर्थ को समझ लिया जाए।

चिन्ता कि परिभाषा :-

1. सुलिवान (1953) के अनुसार :-

“चिन्ता तनाव कि वह अवस्था है, जो अतः वैयक्तिक सम्बन्धों के अनुभवों से उत्पन्न होती है।

2. में (1950) के अनुसार :-

“भय के संकेत की अनुभूति की कोई मात्रा जो व्यक्ति अपने व्यक्तित्व के अस्तित्व के लिए आवश्यक समझता है, वह चिन्ता कहलाती है।”

3. स्पाइलबरगर (1960) के अनुसार :-

“चिन्ता उदोलन की वह अवस्था है, जो भय से बचने के कारण उत्पन्न होती है।”

स्पाइलबरगर (1960) की उपर्युक्त परिभाषा में अवस्था (State) का अभिप्राय उस दशा से है। जिनमें संपूर्ण व्यक्ति सम्मिलित है। इसी प्रकार उदोलन (Arousal) का अर्थ तनाव की दशा, बेचैनी अथवा अनुकिया के प्रतिक्रिया करने की तत्परता से है। भय का अभिप्राय भय अथवा पीडा के पूर्व अनुमान से है। आधुनिक युग में चिन्ता का एक महत्वपूर्ण प्रत्यय तथा परिवर्त्य है, क्योंकि आजकल के प्रत्येक व्यक्ति में यह लक्षण थोड़ी अथवा बहुत मात्रा में दिखाई देता है।

जटील कार्यों में निष्पादन तथा शैक्षिक उपलब्धि की चिन्ता से घनिष्ठ संबंध है।

■ चिन्ता के प्रकार :-

स्पाइलबरगर (1962) ने चिन्ता के दो प्रकार बताए हैं :-

1. शीलगुण/लक्षण चिन्ता (Trait Anxiety) इस प्रकार की चिन्ता व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक शीलगुण/लक्षण है।

कैटल (R.B. Catell, 1962) ने इस प्रकार की चिन्ता का वर्णन Second Order Personality Factors-1 के द्वारा किया है। जिस व्यक्ति में इस प्रकार की चिन्ता अधिक मात्रा में होती है। वह कम खतरनाक परिस्थिति को भी अधिक खतरनाक परिस्थिति के रूप में प्रत्यक्षीकृत करते हैं। यह चिन्ता अपेक्षाकृत स्थायी होती है।

2. अवस्था चिन्ता (State Anxiety)

इस प्रकार की चिन्ता अपेक्षाकृत अस्थायी और परिवर्तनशील होती है। सामान्य जीवन में इस प्रकार की चिन्ता निम्न स्तर की रहती है। पर किसी खतरनाक उद्दिपक के उपस्थित होते ही इस प्रकार की चिन्ता का स्तर बढ़ जाता है।

स्पाइलबरगर (1962) के अनुसार, "चिन्तात्मक अवस्था से तात्पर्य आत्मगत एवं चेतन रूप से प्रत्यक्षीकरण की गई इस तनाव एवं आशंका की भावना से है; जो स्वचलित नाडी मंडल के सक्रिय होने से संबंधित होती है।"

चिन्ता को प्रभावित करने वाले कारक :-

चिन्ता को प्रभावित करने वाले कुछ महत्वपूर्ण कारक हैं, जो निम्नलिखित हैं :-

1. सामाजिक - आर्थिक स्तर
2. शहरी एवं ग्रामीण जीवन
3. कुण्ठा
4. संवेगात्मकता
5. पारिवारिक वातावरण
6. विद्यालय का वातावरण
7. व्यक्ति का स्वास्थ्य

8. सेक्स
9. बुद्धि
10. भाषा
11. आत्मप्रत्यय
12. हीनता की भावना
13. शैक्षणिक उपलब्धि आदि।

■ **शैक्षणिक चिन्ता :**

वर्तमान में चिंतित अवस्था दैनिक जीवन का एक सामान्य तत्व बन गया है। यह मानव जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है, क्योंकि हम सभी लोग किसी न किसी तरह चिन्ता की अवस्था में रहते हैं। जो की विभिन्न प्रकार से हमसे संबंधित है। सामान्यतः चिन्ता की अवस्था गुणों से संबंधित या चरणों से संबंधित होती है। गुणों से संबंधित चिन्ता स्थिर विशेषता के लिए हुए या व्यक्ति के गुणों से संबंधित होती हैं।

शैक्षणिक चिन्ता स्टेट (अवस्था) चिन्ता का एक प्रकार है, शैक्षणिक चिन्ता आनेवाले खतरे से जुडी होती है। जो की शैक्षणिक संस्थाओं के पर्यावरण से संबंधित है। इसमें शिक्षक तथा कुछ विषयों को शामिल किया जाता है, जैसे – गणित व अंग्रेजी इत्यादी विषय, परीक्षा से डर, कक्षा वातावरण, मित्र-परिवार, पढाई का डर, भाषा इत्यादी को शामिल किया जाता हैं।

विद्यालय भी बालक के मानसिक स्वास्थ्य और उसकी चिन्ता को प्रभावित करता है। विद्यालय का वातावरण, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, परीक्षा प्रणाली, अध्यापक का व्यवहार आदि बालक के चिन्ता को प्रभावित करते हैं। विद्यालय में भय, आतंक तथा अवरुद्ध वातावरण के होने, पाठ्यक्रम के अत्याधिक बोझिल होने के कारण, परीक्षा प्रणाली उचित न होने तथा शिक्षक के सहानुभूती पूर्ण व सहयोगात्मक व्यवहार के अभाव में बालक चिंतित हो जाते हैं।

■ **शिक्षा संस्था का प्रभाव :**

बालको की चिन्ता पर प्रभाव डालने वाले तत्वों में शिक्षा संस्था तथा उससे संबंधित अनेक तत्व उत्तरदायी है, जिनमें से निम्नलिखित प्रमुख हैं :-

1. विद्यालय का वातावरण :-

विद्यालय के वातावरण का बालकों पर भारी प्रभाव पडता है, यदि विद्यालय में विद्यार्थी असुरक्षित अनुभव करते है तो उनके मस्तिष्क में निरंतर चिन्ता व भय बना रहता है। सांप्रदायिकता, भेदभाव, कुप्रबंध के कारण विभिन्न प्रकार के झगडे होते रहते है। जिनके कारण वातावरण अशांत रहता है, जो की विकास में बाधा उत्पन्न करता है। यह सब विद्यार्थियों पर बुरा प्रभाव डालते है।

2. अनुपयुक्त पाठ्यक्रम :-

शिक्षा के उद्देश्यों तथा निर्धारित पाठ्यक्रम में सामंजस्य न होने के कारण विकास की अनेको समस्याएँ उत्पन्न होती है, जिनका निराकरण आसानी से संभव नहीं होता जिनमें चिन्ता उत्पन्न हो जाती है।

3. कक्षा में असमायोजन :-

चिन्ता के लिए कक्षा भी उत्तरदायी होती है। मानसिक रूप से अस्वस्थ बालक शिक्षक की कार्यप्रणाली को तो प्रभावित करती ही है। साथ-साथ अन्य बालकों पर भी उनका प्रतिकूल प्रभाव पडता है। कक्षा में चिन्ता उत्पन्न होने के अनेक उदाहरण है। जैसे-लडना-झगडना, तुतलाना, निंद आना, नाखुन काटना, हिन व्यवहार, भावनात्मक अपरिपक्वता, समाज विरोधी व्यवहार, गंदी भाषा का बोलना, भाषा न आने की समस्या, मनोदैहीक बाधाएँ देखे जा सकते है।

4. परीक्षा प्रणाली :-

यदि परीक्षा प्रणाली ऐसी है जिससे विद्यार्थी का मूल्यांकन ठीक प्रकार से नहीं हो सकता तो उसकी योग्यता का सही पता नहीं हो पाएगा, और इस प्रकार विद्यार्थी वातावरण से समायोजन नहीं कर पायेगा। कभी कभी तो कमजोर बालकों को कक्षोन्नती दे दी जाती है, और वह सदैव अपनी कक्षा में इस प्रकार परीक्षा प्रणाली विद्यार्थियों की चिन्ता को प्रभावित कर सकती है।

5. शिक्षक का व्यवहार :-

शिक्षक का व्यक्तित्व विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को निरंतर प्रभावित करता रहता है। कभी कभी शिक्षक का व्यवहार अत्यंत निरंकुशपूर्ण होता है, तो विद्यार्थी सदैव भयभीत और चिंतीत रहते हैं। उन्हें विचार करने की स्वतंत्रता नहीं दी जाती, यह स्थिति मानसिक स्वास्थ्य पर गलत प्रभाव डालती है। इसके विपरित परिस्थिति में सही दिशा बोध नहीं हो पाता।

6. मित्रता का अभाव :-

शिक्षक जब कठोर अनुशासन पर बल देता है तो वह मित्रता के अभाव को विद्यालय में बढ़ा देता है।

7. कक्षा पास करने के नियम :-

हमारे विद्यालयों में कक्षा पास करने के नियम कुछ इस प्रकार से बने हुए हैं कि, बहुत से बालक फेल हो जाते हैं। उनके मन को धक्का लगता है और वे अपने को व्यर्थ समजते हैं जिससे वह चिंतीत हो जाते हैं।

8. असफल होने का भय :-

अनेक विद्यार्थी मानसिक रोगग्रस्त हो जाते हैं क्योंकि उन्हें असफल होने का भय रहता है।

9. गृह-कार्य :-

जब बालकों को बहुत अधिक गृह-कार्य दिया जाता है जिसे वे नहीं कर पाते तब भी उनका मानसिक विकास नहीं होता।

10. कठिन पाठ्यक्रम

11. विद्यालय में अत्याधिक प्रतियोगिता

12. अध्यापकों के अकसर स्थानांतरण

13. अच्छे कार्य के लिए प्रोत्साहन का अभाव

14. तानाशाही वातावरण

15. व्यथित तथा असमायोजित अध्यापक

1.2 शोध की आवश्यकता :-

प्राचीन काल से मानव भयभीत होता आ रहा है। आज भी मानव के मनमें डर, भय है, और उसी के कारण से चिन्ता का जन्म होता है। बच्चों को भी डर रहता है, और बच्चें किसी न किसी चिन्ता की अवस्था में रहते हैं।

बहुत से बालकों में चिन्तित रहने की आदत बन जाती है। वे यह सोचने लगते हैं की वह जीवन में सुखी नहीं हैं। कोई भी आकस्मिक घटना उनके मस्तिष्क पर बोझ बन जाती है और वह समझने लगते हैं कि, उस घटना विशेष के परिणामस्वरूप उनका समस्त जीवन अंधकारमय हो जायेगा। इसी कारण वे अधिक चिन्ताग्रस्त होते हैं।

हम टेलीविजन पर देखते हैं, सुनते हैं, या किसी अखबार में पढ़ते हैं कि, परीक्षा में पास न होने के कारण, परीक्षा के तनाव के कारण छात्र ने खुदखुशी की, जहर पिया या ट्रेन के नीचे आकर आत्महत्या की, ऐसी घटनाएँ हम अक्सर सुनते हैं। चिन्ता की वजह से कुछ बच्चे स्कूल में नहीं जाते हैं। कुछ बच्चे घर छोड़कर भाग जाते हैं, कुछ बुरी आदतों के शिकार हो जाते हैं, कुछ बच्चे गलत काम भी करने लगते हैं। ऐसी ख़बरे हम अक्सर पढ़ते-सुनते हैं। अभिभावक भी अपने बच्चों से उनकी क्षमता से अधिक अपेक्षा रखते हैं। इस कारण से विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता बढ़ जाती है।

आजकल शालेय मुल्यांकन में शैक्षणिक उपलब्धि को जादा ही महत्व दिया जाता है। इसलिए अभिभावक एवं शिक्षक शैक्षणिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए प्रयास करते हैं। इसलिए इस अध्ययन की आवश्यकता है।

1.3 समस्या कथन :-

“माध्यमिक शाला के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन”

1.3 समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की परिभाषा :-

1. शैक्षणिक चिन्ता :

- "शैक्षणिक चिन्ता यह डर संपादन में असफलता का मानक अथवा वह डर जिससे, हमें विद्यालयों में उपयुक्त मानक नहीं मिल पाता।"
- शैक्षणिक चिन्ता स्टेट चिन्ता का एक प्रकार है, शैक्षणिक चिन्ता आनेवाले खतरे से जुडी होती है; जैसे- शैक्षणिक वातावरण, शाला एवं शालाओं से जुडी अध्यापक तथा कुछ विषय गणित और अंग्रेजी आदि।

2. शैक्षणिक उपलब्धि :

■ फ़िमें-

"वह परिक्षण जो विषय विशेष के ज्ञान, बोध एवं कौशल का मापन करता है, उसे उपलब्धि परिक्षण कहते है।"

■ ईबेल-

"उपलब्धि परिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों के ग्रहण किए गए ज्ञान, कुशलता व क्षमता का मापन होता है।"

- शैक्षणिक उपलब्धि का अर्थ यह है कि, छात्र ने किस अंश तक विद्यालय द्वारा निश्चित किये गये उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया है; उनकी जानकारी लेना है। वह जानकारी, आँकड़ों, मात्रा एवं श्रेणी में व्यक्त की जाती है।

1.4 शोध में प्रयुक्त चर :

प्रस्तुत अध्ययन में चर निम्नलिखित है :-

1. स्वतंत्र चर : शैक्षणिक चिन्ता,

लिंग (छात्र एवं छात्राएँ) और

प्रबंधन (शासकीय एवं अशासकीय)।

2. आश्रित चर : शैक्षणिक उपलब्धि।

1.5 शोध के उद्देश्य :-

1. विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता ज्ञात करना।

2. विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि ज्ञात करना।
3. विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता तथा शैक्षणिक उपलब्धि में संबंध का अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता पर लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता के अंतर का अध्ययन करना।

1.6 शोध कि परिकल्पनाएँ :-

1. विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता तथा शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
2. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षणिक चिन्ता में सार्थक अंतर नहीं है।
3. छात्र तथा छात्राओं की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।
4. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक चिन्ता में सार्थक अंतर नहीं है।
5. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि में सार्थक अंतर नहीं है।

1.7 शोध की परिसीमाएँ :-

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल महाराष्ट्र राज्य अहमदनगर जिला और नेवासा तहसील के अंतर्गत ही सीमित है।
2. यह अध्ययन माध्यमिक स्तर तक ही सीमित है।
3. प्रस्तुत अध्ययन केवल छात्र एवं छात्राओं की शैक्षणिक चिन्ता तथा शैक्षणिक उपलब्धि तक ही सीमित है।
4. प्रस्तुत अध्ययन कक्षा 9 वी तक सीमित होगा।
5. यह अध्ययन दो विद्यालय (शासकीय एवं अशासकीय) तक ही सीमित है।
6. अध्ययन 114 विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है।